Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
July to September 2025, E-Journal, Vol. I, Issue LI (51), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

नेपाल में राजनीतिक अस्थिरता का भारत पर प्रभाव

दीपिका शर्मा *

* शोधार्थी, कोटा विश्वविद्यालय, कोटा (राज.) भारत

प्रस्तावना – नेपाल भारत का पड़ोसी देश है जो की भू–आबद्ध है,अर्थात इसकी सीमाएं तीन तरफ से भारत से गिरी हुई है इसलिए समुद्री व्यापार हेतु भारत नेपाल को सहयोग प्रदान करता है।

भू राजनीतिक दृष्टिकोण से देखा जाए तो नेपाल, चीन और भारत के मध्य एक बफर स्टेट है ,जिसे दोनों देश अपनी तरफ से संतुलित करने का प्रयास करते हैं।

ना केवल सामरिक दृष्टि बल्कि ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और आर्थिक रूप से भी नेपाल ,भारत की विदेश नीति में एक विशेष महत्व रखता है। नेपाल में स्थित लुंबिनी भारत में उत्पन्न बौद्ध धर्म का पवित्र स्थान माना जाता है, जहां भगवान बुद्ध का जन्म हुआ था एवं नेपाल के संघीय गणराज्य घोषित होने से पूर्व इसे एक मात्र हिंदू राष्ट्र के नाम से जाना जाता था।

दोनों देश खुली सीमा और लोगों की निर्बाध आवाजाही साझा करते हैं, विवाह और पारिवारिक संबंधों के कारण इन्हें रोटी बेटे के रिश्ता का नाम भी दिया जाता है इस प्रकार दोनों देश परस्पर धार्मिक और सांस्कृतिक संबंधों का इतिहास साझा करते हैं।

नेपाल भारत के पांच राज्यों उत्तराखंड,उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल, सिक्किम और बिहार के साथ सीमा साझा करता है। सीमावर्ती नेपाल की तराई क्षेत्र में पाए जाने वाला मधेशी समुदाय भी भारत से नजदीकी संबंध साझा करता है।

वर्ष 1950 में भारत और नेपाल के मध्य हुई शांति और मित्रता की संधि भी उनके संबंधों का एक ऐतिहासिक आधार है, जब नेपाल पर हमले को भारत की संप्रभुता पर खतरा माना जाता था।

वर्ष 1960 में काठमांडू के राजा महेंद्र के काल में भी भारत और नेपाल के मध्य औद्योगिक एवं आर्थिक सहयोग को बढ़ावा दिया गया, कोसी एवं गंडक नहर परियोजनाओं पर हस्ताक्षर किए गए।

वर्ष 1996 में गिरिजा प्रसाद कोइराला एवं भारत में एच.डी.देवगौड़ा की सरकार के मध्य महाकाली संधि जिसे पंचेश्वर बहुउद्देशीय परियोजना के नाम से भी जाना जाता है ,ने जल, विद्युत, सिंचाई जैसे क्षेत्रों में साझा सहयोग को सुनिश्चित किया।

वर्ष 1990 में व्यापार एवं पारगमन संधि एवं उसके बाद हुए ऊर्जा, सड़क, सुरक्षा समझौतो ने दोनों देशों के मध्य संबंधों को सुचा: रूप से गति प्रदान की और इन सभी संधियों की बदौलत ही सतही मतभेद कभी गहरे नहीं हुए और भारत ने एक जिम्मेदार पड़ौसी होने के नाते नेपाल को हर संभव सहयोग उपलब्ध करवाया, चाहे वह आर्थिक सहयोग हो ,बुनियादी ढांचे का विकास हो ,या व्यापार एवं पारगमन समझौतो पर क्रियान्वयन हो।

हाल ही में भारत ने काठमांडू को रक्सौल से जोड़ने वाली इलेक्ट्रिक रेल बनाने हेतु समझौता ज्ञापन पर भी हस्ताक्षर किए हैं। भारत द्विपक्षीय रक्षा सहयोग में उपकरण और प्रशिक्षण के माध्यम से नेपाली सेना को उसके आधुनिकरण में सहायता देता है। भारतीय सेना के गोरखा रेजीमेंटों का गठन आंशिक रूप से नेपाल की पहाड़ी जिलों से भर्ती कर किया जाता है।

नेपाल हिमालय की तलहटी में बसा देश है जो भूकंप और बाढ़ की दृष्टि से संवेदनशील क्षेत्र में आता है उससे होने वाले जान माल के नुकसान की भरपाई करने हेतु भारत मानवीय सहायता भी उपलब्ध करवाता है।

इन सभी बहुउद्देशीय संबंधों के बावजूद 21वीं सदी भारत और नेपाल के संबंधों के मध्य कई चुनौतियां लेकर आई है, जिसका मुख्य कारण नेपाल की राजनीतिक अस्थिरता को माना जाता है।

नेपाल की राजनीतिक अस्थिरता के कारण एवं उनका भारत पर प्रभाव ही इस शोध पत्र का अभीष्ट है।

नेपाल के इतिहास को देखा जाए तो इसने राजशाही से लेकर लोकतंत्र का सफर तय किया है ,जिसकी पहली शुरुआत वर्ष 1990 में नेपाल में पंचायत व्यवस्था की औपचारिक समाप्ति से हुई और तत्पश्चात नवंबर 1990 में के. पी. भट्टाराई की अंतरिम सरकार द्वारा एक नया संविधान निर्मित किया गया। साथ ही इसी वर्ष वहां पहली बार बहुदलीय राजनीतिक व्यवस्था के अंतर्गत चुनाव आयोजित किए गए, जिनमें नेपाली कांग्रेस के गिरिजा प्रसाद कोइराला ने सरकार बनाई किंतु वह मात्र चार सालों में ही गिर गई।अत: 18 माह पूर्व नवंबर 1994 में पुन: चुनाव आयोजित किए गए ,परंतु किसी भी पार्टी को बहुमत नहीं मिलने से नेपाल के इतिहास में पहली बार कम्युनिस्ट सरकार अस्तित्व में आई किंतु अल्पमत के कारण वह भी 9 माह में गिर गई। सितंबर 1995 में नेपाली कांग्रेस के शेर बहादुर देउबा ने सरकार बनाई और वर्ष 1999 में भी नेपाली कांग्रेस को बहुमत मिला किंतु राजा ज्ञानेंद्र ने वर्ष 2002 में संसद को भंग कर दिया।

जिसके फलस्वरुप पुष्प कमल दहल प्रचंड,बाबूराम भट्टाराई और छोटे कम्युनिस्ट समूहों द्वारा 1996 में गठित 'कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ नेपाल' (माओवादी) ने राजशाही के विरुद्ध सशस्त्र जनयुद्ध की घोषणा कर दी, इसे नेपाली माओवादी विद्रोह के नाम से भी जाना जाता है। 1996 से लेकर 2006 तक चले इस जन आंदोलन में लगभग 13000 लोगों की जानें गई। इसी वर्ष भारत की मध्यस्थता और अंतरराष्ट्रीय सहयोग से 'समग्र शांति समझौता' भी करवाया गया।

जिसके बाद माओवादी लोगों की राजनीतिक सहभागिता को बढ़ाकर उन्हें मुख्यधारा में लाया गया।

अतएव 24 अप्रैल 2006 को राजा ज्ञानेंद्र द्वारा भंग संसद को बहाल करने की घोषणा की गई और राजशाही की शक्ति को समाप्त कर दिया गया।

वर्ष 2006 से 2008 तक नेपाली कांग्रेस के गिरिजा प्रसाद कोइराला के नेतृत्व में बनी सरकार ने भारत की ओर सकारात्मक रुख अपनाया और भारत ने भी नेपाल में लोकतांत्रिक प्रक्रिया और शांति प्रक्रिया को लागू करने में सक्रिय भूमिका निभाई।

वर्ष 2008 में नेपाल आधिकारिक रूप से संघीय लोकतांत्रिक गणराज्य बन गया और राजतंत्र का अंत हो गया इसी वर्ष संविधान सभा के चुनाव हुए और रामबरन यादव ने संघीय गणराज्य, नेपाल के प्रथम राष्ट्रपति के रूप में शपथ ली साथ ही गठबंधन सरकार को पुष्प कमल दहल प्रचंड का नेतृत्व मिला। इस माओवादी सरकार का भारत के प्रति संदेह पूर्ण दृष्टिकोण था और तुलनात्मक रूप से चीन की ओर झुकाव अधिक था।

वर्ष 2009 में प्रचंड ने अपने पद से इस्तीफा दे दिया और यह राजनीतिक अस्थिरता का दौर नेपाल में लगातार चलता रहा।

वर्ष 2009 से 2011 के मध्य सीपीएन यूएमएल के माधव कुमार नेपाल ने दोनों देशों के मध्य संतुलन बनाने की कोशिश की। साथ ही नेपाल के संविधान निर्माण में भारत ने भी यथा योग्य सहयोग प्रदान किया।

वर्ष 2011 में सीपीएन यूएमएल के झलनाथ खनाल का कार्यकाल अत्यंत छोटा रहा और भारत से उनके संबंध सामान्य किंतु ठंडे रहे।

2011 से लेकर 2013 तक माओवादी सरकार की बाबूराम भट्टाराई ने भारत से रिश्तो में सुधार की कोशिश की एवं सड़क, ऊर्जा ,व्यापार जैसे कई आर्थिक समझौते किए,इसे उनका व्यवहारिकता पूर्ण कदम कहा गया। वर्ष 2013 से 2014 में खिलराज रेग्मी (चीफ जस्टिस)की अंतरिम सरकार के नेतृत्व में सामान्य सहयोगात्मक संबंध रहें।

वर्ष 2014 से 2015 में पुन: नेपाली कांग्रेस सत्ता में आई और सुशील कोइराला के नेतृत्व में बनी सरकार ने भारत से अच्छे संबंधों की शुरुआत की।2015 में नेपाल का नया संविधान अस्तित्व में आया किंतु संविधान में मधेशियों की भागीदारी को लेकर विवाद हुआ जो कि भारत नेपाल संबंधों में तनाव का कारण बना।

वर्ष 2015 से 2016 में सीपीएन यूएमएल के केपी शर्मा ओली की सरकार का प्रत्यक्ष झुकाव चीन की तरफ था। इस कारण भारत और नेपाल संबंध बहुत पेचीदा हो गए और 2015 में भारत– नेपाल सीमा पर आर्थिक नाकाबंदी भी हुई।

वर्ष 2016 से 2017 तक पुष्प कमल दहल प्रचंड का दूसरा कार्यकाल रहा, जिसमें उन्होंने भारत से अपने संबंधों को सुधारने की कोशिश की और कई परियोजनाओं पर कार्य प्रारंभ किया।

वर्ष 2017 से 2018 तक नेपाली कांग्रेस के शेर बहादुर देउबा प्रधानमंत्री बने ,इस समय भारत के नेपाल से अपेक्षाकृत अच्छे संबंध रहे।आर्थिक सहयोग एवं सीमा सुरक्षा पर परस्पर बातचीत हुई।

2018 से 2021 में केपी शर्मा ओली के दूसरे कार्यकाल के दौरान शुरुआत में भारत से नजदीकी बढ़ी लेकिन बाद में 2020 में नेपाल द्वारा एक ष्राजनीतिक मानचित्रष जारी किया गया ,जिसमें भारतीय क्षेत्र लिपुलेख ,कालापानी, लिपियाधुरा को नेपाल का हिस्सा बताया गया ,जिससे परस्पर तनाव में बढ़ोतरी हुई।

2021 से 2022 में शेर बहादुर देउबा का दूसरा कार्यकाल रहा, उन्होंने भारत के साथ अपने संबंधों को सुधारने का प्रयास किया और ऊर्जा परियोजनाओं एवं कनेक्टिविटी पर सहयोग में वृद्धि की।

वर्ष 2022 से 2024 के मध्य पुष्प कमल दहल प्रचंड पुन: पद पर आसीन हुए और सत्ता में आते ही उन्होंने चीन का दौरा किया उसके बाद भारत की यात्रा भी की।उनकी नीति संतुलनकारी कूटनीति पर आधारित मानी गई, क्योंकि इस कार्यकाल के दौरान कई हाइड्रो पॉवर परियोजनाओं एवं कनेक्टिविटी प्रोजेक्ट्स कोभारत के सहयोग से गति प्रदान की गई।

वर्ष 2024 से नेपाल के प्रधानमंत्री केपी शर्मा ओली है, जिन्होंने भारत से ऊर्जा, रेलवे लिंक, पेट्रोलियम पाइपलाइन और पावर ट्रेड एग्रीमेंट के साथ –साथ ही डिजिटल भुगतान (यूपीआई)एवं कनेक्टिविटी से संबंधित कई समझौतो पर हस्ताक्षर किए हैं।

नेपाल की राजनीतिक व्यवस्था का अध्ययन करने पर हम यह पाते हैं कि, 1951 से लोकतांत्रिक राजनीति की शुरुआत से लेकर अब तक नेपाल में 40 से भी अधिक सरकारें बन चुकी है, लेकिन औसतन हर सरकार की उम्र 1 से 1.5 साल से ज्यादा नहीं रही है। 2008 में नेपाल के गणराज्य बनने के बावजूद भी राजनीतिक अस्थिरता का दौर नहीं थमा है। अगर इस अस्थिरता का विश्लेषण किया जाए तो हम पाते हैं कि गठबंधन की राजनीति इसका एक मुख्य कारण सिद्ध हुई है।जब कोई भी दल अकेले बहुमत प्राप्त नहीं कर पाता है ,तो सरकारें गठबंधन पर निर्भर होती है और स्थायित्व को नहीं प्राप्त कर पाती है।

लोकतंत्रात्मक देश में दल बदल की संस्कृति भी सरकारों की अनिश्चितता को बढ़ावा देती है और ऐसा सिद्धांतों से हीन सत्ता संघर्ष में प्रत्यक्षत: देखा जाता है।

नेपाल के संवैधानिक और वैचारिक विवाद भी इस अस्थिरता को बढ़ावा देते हैं जैसेय नेपाल का संघीय ढांचा, नेपाल में मधेशियों के अधिकार और संवैधानिक संशोधन, जिनसे मुद्दों की राजनीति को हवा मिलती है और विपक्ष तख्ता पलट करने में सफल रहता है।

दलों में होने वाला आंतरिक नेतृत्व संघर्ष भी पार्टी नेताओं के बीच आपसी प्रतिस्पर्धा को बढ़ाकर सरकार को गिरा देता है।जैसा किष ओली बनाम प्रचंडष के केस में देखा गया है। भारत के संदर्भ में इन अस्थिरताओं को जन्म देने का कारण नेपाल पर बढ़ता चीन का प्रभाव है, ऐसे बाहरी दबाव के कारण भी आंतरिक राजनीति में सत्ता संघर्ष बढ़ जाते हैं और सरकारें उनके इशारों की कठपुतली मात्र बन जाती है जो कि विशेषतया नेपाल में भारत विरोधी विचारों को पनाह दे,उनका प्रसार नकारात्मक ढंग से कर जनमत पर ग्राम्शी के विचारधारात्मक प्रभुत्व का प्रयोग कर उन्हें भड़काती है एवं हमारे संबंधों को कगार पर ले जाती है।

चीन द्वारा नेपाल को दी गई आर्थिक सहायता और वन बेल्ट वन रोड़ में नेपाल का शामिल होना चीन के बढ़ते प्रभाव को बताता है जो माओवादी के सत्ता में आने पर स्पष्ट दिखाई पड़ता है।

भारत के संदर्भ में देखा जाएं तो नेपाल की सरकारें जब नेपाली कांग्रेस के नेतृत्व में रही तब भारत से नेपाल के संबंध अपेक्षाकृत मित्रतापूर्ण रहे, लेकिन जब नेपाल में सीपीएन यूएमएल या माओवादी दल सत्ता में आए तो भारत के साथ तनाव और चीन की तरफ झुकाव देखा गया। इससे यह सिद्ध होता है कि दल के विचारों का प्रभाव जनमत को प्रभावित करता है।ना केवल

विदेश नीति अपितु देश की आंतरिक व्यवस्था भी राजनीतिक अस्थिरता के कारण अत्यंत प्रभावित होती है।

ये राजनीतिक अस्थिरता और तनातनी देश के विकास को पीछे की ओर ढकेलती है अत: जहां तक संभव हो लोकतांत्रिक तरीके से, सामंजस्यपूर्ण सरकार का स्थायित्व ही देश को प्रगति की ओर ले जाता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. wikipedia.com
2. panchjanya.com
3. योगेंद्र पाल सिंह –भारत की विदेश नीति।
4. प्रोफेसर रमाकांत – इंडो नेपाल इस रिलेशन फेज 1.
5. श्रीमन नारायण अग्रवाल – इंडिया एंड नेपाल: एन एक्सरसाइज ऑफ ओपन डिप्लोमेसी।
6. शोधपत्र– 21वीं सदी में भारत नेपाल संबंध ,द्वारा ममतामणि त्रिपाठी।

****